भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि ग्यारहवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	**श्रवण**	• गद्य, पद्य की रसानुभूति एवं भाषा सौंदर्य को सुनना, समझना तथा सुनाना । • जनसंचार माध्यमों से प्राप्त सामग्री का आकलन करते हुए सुनना तथा विश्लेषण करना । • प्रवासी साहित्य को सुनना तथा सुनाना ।
२.	**भाषण–संभाषण**	• विभिन्न विषयों के परिसंवादों में सहभागी होकर विचार प्रकट करना । • विभिन्न विषयों को समझकर रेडियो जॉकी के रूप में उन्हें प्रस्तुत करना । • प्रसंगानुरूप विविध विषयों के लिए समाचार तैयार करके प्रस्तुत करना ।
३.	**वाचन**	• विभिन्न साहित्यिक विधाओं का वाचन करना । • पाठों से संबंधित संदर्भ ग्रंथों के वाचन के लिए प्रेरित करना । • ई–साहित्य (ब्लॉग आदि) का नियमित रूप से वाचन करना ।
४.	**लेखन**	• रेडियो जॉकी के रूप में प्रस्तुति के लिए लेखन करना । • रोजगार की संभावनाओं की दृष्टि से विज्ञापन, संवाद, आदि का लेखन करना । • संहिता आदि लेखन कौशल विकसित करना ।
५.	**भाषा अध्ययन (व्याकरण)**	• रस (वात्सल्य, वीर, करुण, हास्य, भयानक) • अलंकार (शब्दालंकार) • वाक्य शुद्धीकरण, काल परिवर्तन, मुहावरे **शब्दसंपदा –** शब्दसंपदा में शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थी, पर्यायवाची, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, कृदंत और तद्धित आदि का समावेश ।
६.	**अध्ययन कौशल**	• अंतरजाल, क्यू.आर. कोड, विभिन्न चैनल्स से प्राप्त जानकारी का उपयोग करना । • पारिभाषिक शब्दावली – बैंक, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को जानना, समझना तथा प्रयोग करना । • समाचार लेखन के सोपानों को समझना तथा समाचार लेखन के नमूने तैयार करना ।